International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-06-2025, Accepted: 09-07-2025, Published: 24-07-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 22-23

ब्रह्मपुत्र के किनारे–किनारे: नदी के सहारे पूर्वोत्तर भारत के समाज और संस्कृति की झलकिया

Vinay Kumar
Department of Hindi, Delhi University, New Delhi, India

सारांश
यह शोध आलेख सांवरमल सांगनेरिया द्वारा लिखित यात्रा–वृत्तांत 'ब्रह्मपुत्र के किनारे–किनारे' का सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। इसके माध्यम से उत्तर–पूर्व भारत की यात्राओं के माध्यम से असम, अरुणाचल, मणिपुर, मेघालय जैसे राज्यों की जनजातीय जीवन, परंपराएँ, स्त्री की भूमिका, धार्मिक आस्थाओं और पर्यावरण चेतना आदि देखने व समझने को मिलती हैं।

मूल शब्दः ब्रह्मपुत्र, यात्रा साहित्य, उत्तर–पूर्व भारत, संस्कृति, समाज, असम, धार्मिक परंपरा, सांस्कृतिक विविधता, जनजातियाँ, लोक परंपराएँ, स्त्री की भूमिका, पर्यावरण चेतना, भाषाई संस्कृति, प्राकृतिक संतुलन

भूमिका

हिंदी यात्रा–साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर रहे सांवरमल सांगनेरिया ने अपने यात्रा–वृत्तांत 'ब्रह्मपुत्र के किनारे–किनारे' में केवल स्थल–वर्णन ही नहीं, बल्कि उस भूगोल की आत्मा को समझने का प्रयास किया है। असम, अरुणाचल, मणिपुर, मेघालय आदि राज्यों की सांस्कृतिक बहुलता, जनजातीय जीवन, आस्थाओं और संघर्षों का जीवन्त चित्रण उनके लेखन में मिलता है।
यह आलेख इस यात्रा–वृत्तांत में प्रस्तुत
सामाजिक वो–सांस्कृतिक संरचनाओं, परंपराओं, जीवन दृष्टियों और विविधताओं का विश्लेषण करता है।

1. यात्रा साहित्य और सामाजिक–सांस्कृतिक विमर्श

यात्रा–वृत्तांत केवल भूगोल की यात्रा नहीं, बल्कि समाज और संस्कृति के गहरे अनुभवों की अभिव्यक्ति है। सांगनेरिया के वृत्तांत में यह स्पष्ट होता है कि वे हर दृश्य के पीछे छिपे सांस्कृतिक तंतु को पकड़ने का प्रयास करते हैं।
नामवर सिंह यात्रा–वृत्तांत को साहित्य का जीवंत गद्य कहते हैं (कहानी नई कहानी, पृ. 119)।

2. उत्तर–पूर्व भारत का सामाजिक परिदृश्य

सांगनेरिया ब्रह्मपुत्र घाटी के माध्यम से एक ऐसे समाज से परिचय कराते हैं जहाँ जनजातीय, बांग्ला, असमिया और नेपाली संस्कृतियाँ सह–अस्तित्व में रहती हैं।
उत्तर–पूर्व भारत की सामाजिक रचना बहुस्तरीय, जटिल किंतु अत्यंत संगठित है। सांगनेरिया के अनुसार, असम, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय जैसे राज्यों में बसी जनजातियाँ सामाजिक संरचना की दृष्टि से आत्मनिर्भर हैं। लेखक ने बोडो, मिशिंग, डफला और गारो जनजातियों की जीवनशैली का सूक्ष्म अवलोकन प्रस्तुत किया है।
इन समुदायों में पारंपरिक सामाजिक संस्थाएँ जैसे श्गांव सभाश, श्अन्तरजनजातीय पंचायतश, श्महिला मंडलश और श्युवा परिषदश अत्यंत प्रभावशाली हैं। ये संस्थाएँ सामूहिक निर्णयों, विवादों के समाधान और उत्सवों के आयोजन में सक्रिय रहती हैं (पृ. 63)।
मिशिंग समाज में स्त्रियों की आर्थिक और सामाजिक भागीदारी स्पष्ट दिखाई देती है। इस अवलोकन में महत्वपूर्ण बात यह है कि इन जनजातियों में सामाजिक पदानुक्रम (ापमतंतबील) की अपेक्षा सहभागिता अधिक प्रमुख है। वे जाति या वर्ण के बजाय भाषा, पहनावा और रीति–नीति के अनुसार समुदायों की पहचान करते हैं। डफला समाज में हर व्यक्ति सामाजिक निर्णय प्रक्रिया का भाग होता है। सांगनेरिया इसे श्लोकतंत्र का स्थानीय मॉडलश कहते हैं।

3. सांस्कृतिक विविधता और लोक परंपराएं

उत्तर–पूर्व भारत की सांस्कृतिक संरचना अत्यंत बहुरंगी है। सांगनेरिया ने केवल उत्सवों और रीतियों का वर्णन नहीं किया, बल्कि उनके भीतर छिपी सामूहिक चेतना को भी उद्घाटित किया है।
सांगनेरिया ने बैसागू, अली–आई–लिगांग, और बिहू जैसे पर्वों का वर्णन कर सांस्कृतिक जीवन की जीवंतता को रेखांकित किया है। बैसागू में प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने की परंपरा है। गायों को सजाना, उन्हें आशीर्वाद देना, और पेड़ों की पूजा करना यहां के जीवन–दर्शन को दर्शाता है।
अली–आई–लिगांग में सामूहिकता की भावना प्रमुख है, जहाँ पूरा गांव एक साथ बीज बोने और पर्व मनाने में जुट जाता है। श्अपुन्गश (स्थानीय मद्य) केवल पेय नहीं, समुदाय की आत्मीयता का प्रतीक है।
बिहू पर्व 'आनंद और श्रम के समन्वय' का उदाहरण है। गीतों में प्रेम, मौसम, श्रम और आशा के भाव साथ–साथ चलते हैं (पृ. 105)।
यहां पर वसन्त बिहू गीतों के साथ अठखेलियां करता हुआ अपने सुंदर एवं अनुपम रूप दिखाता है। बिहू के दिनों में अपने भावी पति या पत्नी को चुनने की सामाजिक छूट होती है दोनों विवाह कर अपने सपनों को साकार करना चाहते हैं। जिसकी एक बानगी दृष्टव्य है –

"बैसाखी बिहू में पूनम की रात में
रचाएंगे तेरा मेरा बिया (ब्याह)।
घर बना दोनों संग खायेंगे
मिलाकर दोनों के हिया(हृदय)।"

इस यात्रा वृत्त में हस्तकला (बुनाई, बांस और लकड़ी का कार्य), गीत–संगीत और लोककथाओं की परंपरा को भी लिपिबद्ध किया गया है। मिशिंग महिलाओं द्वारा बनाए गए वस्त्र केवल परिधान नहीं, सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक हैं (पृ. 118)।

4. धार्मिक आस्था और आध्यात्मिकता

सांगनेरिया कामाख्या, शिवसागर, महाभैरव, बूढ़ा महादेव जैसे स्थलों की यात्रा के माध्यम से धार्मिक विविधता, श्रद्धा और मिथकीय धारणाओं का वर्णन करते हैं

सांगनेरिया का दृष्टिकोण धर्म के प्रति आलोचनात्मक न होकर संवेदनशील और सांस्कृतिक है। वे मंदिरों और धार्मिक स्थलों को केवल श्रद्धा का स्थान नहीं मानते, बल्कि उन्हें समुदाय की स्मृति, इतिहास और दर्शन से जोड़ते हैं।

कामाख्या देवी मंदिर की यात्रा के दौरान वे तांत्रिक परंपरा, शक्ति की अवधारणा, और स्त्री–शरीर की पवित्रता जैसे विषयों पर भी विमर्श करते हैं (पृ. 138 – 145)।

ब्रह्मपुत्र नदी को वे जीवन की प्रवृत्ति, मातृत्व और चेतना के रूप में देखते हैं। नदी के साथ स्थानीय लोगों का आत्मिक संबंध केवल आर्थिक या भौगोलिक नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक है (पृ. 153)।

मिशिंग समाज की 'डोनी–पोलो' आस्था, जो सूर्य और चंद्रमा की पूजा पर आधारित है, सांवरमल ने उसे 'प्राकृतिक आस्था का विज्ञान' कहा है।

बोडो समाज की 'बथो' पूजा, जिसमें व्रक्षों, पत्थरों और जल को देवता मानकर पूजा जाता है, लेखक को भारतीय परंपरा का मूल प्रतीक लगता है।

5. स्त्री की सामाजिक भूमिका

लेखक ने जनजातीय स्त्रियों के प्रति रूढ़िगत दृष्टिकोण को तोड़ते हुए उन्हें आत्मनिर्भर, श्रमशील और सामाजिक संरचना में निर्णायक बताया है।लेखक स्त्री को जनजातीय समाज की रीढ़ मानते हैं। उत्तर–पूर्व भारत में स्त्रियाँ केवल घरेलू दायित्वों तक सीमित नहीं, वे समाज के हर स्तर पर सक्रिय हैं।

यहां बाजार व्यवस्था में महिलाओं की उपस्थिति रहती है। मिशिंग और डफला समाज में महिलाएँ कृषि, वस्त्र निर्माण, जलस्रोत प्रबंधन, और व्यापार तक में सक्रिय हैं।

सांगनेरिया लिखते हैं कि 'स्त्रियाँ यहाँ परंपरा की वाहक और परिवर्तन की शक्ति दोनों हैं। 'उनके गीतों में स्मृति, संघर्ष, प्रेम, और चेतना की अभिव्यक्ति होती है। वे कहती हैं दृ "हम धरती की बेटियाँ हैं, जो उगाना जानती हैं, झेलना जानती हैं।"

'हांडी बुनाई' और 'शाल निर्माण' जैसी पारंपरिक कलाएँ उनके हाथों से पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानांतरित होती हैं।इन समाजों में स्त्री की अस्मिता एक सामाजिक संपत्ति के रूप में मानी जाती है (पृ. 189)।

6. पर्यावरण और जीवन दर्शन

पर्यावरण चेतना सांगनेरिया के यात्रा–वृत्तांत की विशेषता है। ब्रह्मपुत्र केवल नदी नहीं, अपितु एक संस्कृति–वाहिनी जीवनधारा है। सांगनेरिया उसका संबंध केवल जल नहीं, बल्कि आजीविका, आस्था और अस्तित्व से जोड़ते हैं। इसमें ब्रह्मपुत्र के जल प्रवाह, उसके बाढ़ और पुनर्नवा जीवन पर प्रभाव को विविध रूपों में देखा जा सकता है।

वे जनजातियाँ जो ब्रह्मपुत्र नदी के साथ जीती और सहती हैं, वह इस यात्रा वृत्त का बहुत संवेदनशील चित्र है।जहां एक तरफ वह बाढ़ के दिनों में लोगों की गृहस्थी को अपने में समाहित करके ले जाती है वहीं दूसरी तरफ सूखे के समय में जीवनदायिनी बनकर आती है। जिससे ब्रह्मपुत्र नदी के साथ रहने वाले लोग उसे श्जल देवीश मानते हैं। उसके हर रूप – बाढ़, धारा, शांतावस्था – को स्वीकार करते हैं।

इसमें एक विशेष बात यह है कि 'यह समाज बाढ़ से लड़ता नहीं, उसे समझता और अनुकूलित करता है।' (पृ. 214)

पारंपरिक जलस्रोत – 'हाम्टी', 'दूई', 'नमथी' जैसे कुएँ और जलशोधक तालाबों की चर्चा भी इसमें मिलती है जो यह बतलाते हैं कि यह लोक ज्ञान आधुनिकता से अधिक सतत और सुरक्षित है।

यहां विशिष्ट उल्लेखनीय बात यह देखने को मिलती है कि स्थानीय लोग पेड़ काटने से पहले पूजा करते हैं और हर पेड़ के स्थान पर नया वृक्ष लगाना अपना कर्तव्य मानते हैं (पृ. 230)।

निष्कर्ष

'ब्रह्मपुत्र के किनारे–किनारे' केवल एक यात्रा वृतांत नहीं, बल्कि उत्तर–पूर्व भारत की आत्मा का सजीव चित्रण है। सांगनेरिया का वृत्तांत हमें यह सिखाता है कि भारत केवल भौगोलिक विविधताओं का देश नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सह–अस्तित्व का जीता–जागता रूप है।

ब्रह्मपुत्र के किनारे–किनारे' केवल यात्रा–वृत्तांत नहीं, बल्कि उत्तर–पूर्व भारत की आत्मा का साहित्यिक प्रतिबिंब है। सांवरमल सांगनेरिया एक ऐसे यात्री हैं जिन्होंने स्थान को नहीं, वहां के लोगों को, उनके हृदय, संस्कृति, स्मृति और संघर्षों को समझा है। उनका वृत्तांत आधुनिक भारत के उस हिस्से को सामने लाता है जो अनदेखा और उपेक्षित रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. सांवरमल सांगनेरिया – ब्रह्मपुत्र के किनारे–किनारे (राजकमल प्रकाशन, 2011) प्रमुख पृष्ठ: 45–51, 63–87, 105–112, 132–138, 144–156, 191–203
2. नामवर सिंह – कहानी नई कहानी – पृ. 119–122
3. रमेश कुशवाहा – हिंदी यात्रा साहित्य: स्वरूप और संदर्भ – पृ. 67–80
4. केदारनाथ सिंह – भाषा और समाज – पृ. 97–104
5. डॉ. हेमंत जोशी – भारतीय समाज और जनजातियाँ – पृ. 54–68
6. डॉ. पुष्पा शर्मा – उत्तर–पूर्व भारत की सांस्कृतिक धारा – पृ. 42–58